पाठ 15. चंदा मामा

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में तनाव से निपटने का कौशल विकसित करना है ताकि उनमें अपनी तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति समझ पैदा हो सके। श्यामसुंदर अग्रवाल द्वारा रचित यह कविता चाँद तथा एक छोटी बच्ची के बीच हुए वार्तालाप का बड़ा ही मार्मिक वर्णन करती है।

पाठ का सार

छत पर जाकर गुड़िया रानी रोज़ चंदा मामा से बातें करती है। जब पूनम का चाँद आकार में घटने लगता है तो गुड़िया की चिंता बढ़ जाती है। गुड़िया चंदा मामा से दुबले होने का कारण पूछती है। गुड़िया जानना चाहती है कि क्या चंदा मामा भोजन चबाकर करते हैं या नहीं। गुड़िया को चंदा मामा का पूरा आकार ही अच्छा लगता है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस कविता का वाचन कक्षा की किसी बच्ची से करवाएँ। इसके लिए पहले आप स्वयं वाचन करें और बच्ची को हाव-भाव के साथ उसका अनुसरण करने को कहें। आसमान में दिखने वाली वस्तुओं जैसे–चाँद, तारे, सूरज आदि के बारे में सरल शब्दों में चर्चा करें। **पूर्णिमा** और **अमावस्या** के बारे में बच्चों को जानकारी दें। कविता में दूध और भोजन को चबाकर खाने का प्रसंग आया है। इस प्रसंग को स्वास्थ्य और खान-पान की आदतों के संदर्भ में जोड़कर बताएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 23** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - मिलते-जुलते अर्थ वाले व उलटे अर्थ वाले शब्दों से संबंधित अभ्यास बच्चे पहले ही कर चुके हैं। उसी आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर बच्चों से लिखवाएँ। कुछ विलोम शब्दों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग करवाया जा सकता है–वह वृक्ष पर **चढ़ा** फिर **उतरा।**
  - वाक्य-निर्माण में वचन, लिंग, क्रिया आदि के प्रयोग पर ध्यान दिलाएँ।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - बच्चों को समझाएँ कि चाँद की अपनी रोशनी नहीं होती है। वह सूरज की रोशनी से चमकता है। वही रोशनी चाँद से टकराकर धरती पर पड़ती है। इस रोशनी को **चाँदनी** कहा जाता है।
  - सूरज की रोशनी चाँद पर जब पूरी पड़ती है तब चाँद पूरा गोल दिखता है। जिस दिन चाँद पूरा दिखता है उस दिन को **पूर्णिमा** कहते हैं। इसके बाद प्रतिदिन चाँद का प्रकाशित भाग घटता जाता है। इस कारण इसका आकार प्रतिदिन घटता हुआ प्रतीत होता है। जिस दिन सूरज की रोशनी चाँद पर बिलकुल नहीं पड़ती है, उस दिन को **अमावस्या** कहते हैं।